

## आधुनिक काल

1. आधुनिक काल नाम सर्वप्रथम रामचन्द्र शुक्ल ने दिया।  
आधुनिक काल नवीन प्रवृत्ति है, जो निरंतरता का बोध कराती है। आधुनिक काल में साहित्य की भाषा विशुद्ध खड़ी बोली थी। पं. जुगल किशोर का समाचार-पत्र 'उदंड मातंड' (प्रथम हिन्दी समाचार-पत्र), राजा राममोहन राय का बंगदूत इसी काल के हैं।  
सर्वमान्य रूप से आधुनिक काल के निम्नलिखित भाग हैं-

1. पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल) 1857-1900 ई.
2. जागरण अथवा सुधार काल (द्विवेदी काल) 1900 - 1918 ई.
3. छायावाद काल 1918- 1938 ई.
4. छायावादोत्तर काल- (क) प्रगति-प्रयोग काल 1938- 1953 ई.  
(ख) नवलेखन काल 1953.....

1. **पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल)**- भारतेन्दु काल की कविता में सामाजिकता का अधिक प्रभाव दिखाई पड़ता है। कुरीतियों का खंडन, सामाजिक दुरवस्था के प्रति दुःख, आर्थिक शोषण का विरोध, खेद, धन निवेश जाने का विरोध जैसी प्रमुख घटनाओं का चित्रण पुनर्जागरण की कविता में दिखाई पड़ता है। पुनर्जागरण काल के प्रमुख साहित्यकार एवं उनकी रचनाएं निम्नलिखित हैं-

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र (क) नाटक - भारत दुर्दशा, भारत-जननी  
(ख) काव्य - प्रेममालिका, प्रेम सरोवर, प्रेम माधुरी, प्रेम प्रलाप तथा प्रेम फुलवारी  
(ग) पत्र-पत्रिकाएँ - कविवचन सुधा -1867 ई. काशी से प्रकाशित  
हरिश्चन्द्र मैगजीन - 1873 ई.  
बालाबोधिनी - 1873 ई.

बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' (अब्र नाम से उर्दू में लिखते थे)	नाटक	भारत सौभाग्य, वर्षा बिंदु तथा प्रयागरामागमन
	पत्रिका	आनंद कादंबिनी- 1881 ई. मिर्जापुर से। नागरी नीरद
प्रताप नारायण मिश्र	नाटक	भारत दुर्दशा, हठी हमीर तथा कलिकौतुक
	काव्य	प्रेम पुष्पावली, मन की लहर तथा तृप्यन्ताम।
	पत्रिका	ब्राह्मण तथा हिन्दुस्तान
राधाकृष्ण दास (भारतेन्दु के फुफेरे भाई थे)	नाटक	महाराणा प्रताप सिंह, दुःखिनी बाला तथा धर्मालाप।
	उपन्यास	निस्सहाय बिन्दु
	भारत बारहमासा इनकी प्रसिद्ध रचना है	
अंबिकादत्त व्यास	काव्य	बिहारी बिहार तथा पावस पचासा
	नाटक	ललिता तथा गोसंकट
	पत्रिका	वैष्णवपत्रिका (पीयूष प्रवाह) 1884 ई. काशी से
राधाचरण गोस्वामी	काव्य	नवभक्तमाल, भ्रमरगीत, प्रेमबगीची तथा विधवा विलाप।
	नाटक	सुदामा नाटक, सती चंद्रावली तथा अमर सिंह राठौर।
	पत्रिका	भारतेन्दु-वृन्दावन से प्रकाशित।
बालकृष्ण भट्ट	उपन्यास	नूतन ब्रह्मचारी तथा सौ अजान एक सुजान।
	नाटक	पद्मावती तथा नयी रोशनी का विष।
	पत्रिका	हिंदी प्रदीप-1877 ई. इलाहाबाद से प्रकाशित।

2. **जागरण एवं सुधार काल (द्विवेदी युग)**- आधुनिक युग के द्विवेदी युग को जागरण काल या सुधार काल कहते हैं। द्विवेदी युग के साहित्यकारों में सामाजिक दुर्दशा के साथ ही स्वतंत्रता प्राप्ति की चाह का निर्माण भी हुआ। द्विवेदी युग के प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएं निम्नलिखित हैं-

डॉ. नागेन्द्र ने द्विवेदी युग को "जागरण काल" कहा है।

रचनाकार	रचनाएं
महावीर प्रसाद द्विवेदी	सम्पत्ति शास्त्र, रसज्ञ रंजन, कोविद-कीर्तन
मैथिलीशरण गुप्त	साकेत, भारत-भारती, यशोधरा, किसान, गाँधी राष्ट्रकवि कहे
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	प्रिय प्रवास, वैदेहीवनवास, रसकलश, पद्य प्रसून
रामचरित उपाध्याय	विचित्र विवाह, रामचरित, चिंतामणि, देवसभा, देवदूत
सत्यनारायण 'कविरत्न'	भ्रमरदूत, प्रेमकली
बंकिमचंद्र चटर्जी	बांग्ला साहित्य, आनंदमठ

रामनरेश त्रिपाठी	पथिक, स्वप्न, मिलन, मानसी
कामता प्रसाद गुरु	दुर्गावती
वियोगी हरि	प्रेम शतक, वीर सतसई, ब्रजमाधुरी सार।

3. **छायावाद-** दोनों विश्वयुद्धों के मध्य जो कविता लिखी गई, उसे सामान्यतः छायावादी रचना कहा जाता है। वस्तुतः छायावादी रचना स्वच्छंदतावादी है। छायावाद युग के प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएं इस प्रकार हैं-

रचनाएं	रचनाकार
लहर, झरना, आंसू, कामायनी	जयशंकर प्रसाद
गीतिका, सरोज स्मृति, वन बेला, राम की शक्ति पूजा, प्रेयसी, भिक्षुक, विधवा, तोड़ती पत्थर, बादल राग, कुकुरमुत्ता, तुलसीदास	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
यामा, दीपशिखा, संध्या गीत, ज्ञानपीठ पुरस्कार-1982 में मिला।	महादेवी वर्मा
पल्लव, वीणा, ग्रन्थि, नौका विहार, युगवाणी।	सुमित्रा नंदन पंत
	इससे पूर्व राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा
- हिमतरंगिणी, हिमकिरीटिनी, पुष्प की अभिलाषा	(1) माखनलाल चतुर्वेदी
भैरवी, कुणाल, वासंती	(2) सोहन लाल द्विवेदी
हम विषपायी जनम के, अपलक, विनोबा स्तपन।	(3) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

4. **प्रगतिवाद-** वर्ष 1936 में सामाजिक चेतना से मुक्त, छायावाद की कोख से प्रगतिवादी अथवा प्रगतिशीलवाद का उदय हुआ। प्रगतिवाद में रूढ़िवाद एवं कूपमंडूकता का विरोध किया गया। प्रगतिवाद के प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएं इस प्रकार हैं-

रचनाएं	रचनाकार
कुकुरमुत्ता, भिक्षुक, बेला	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
प्रेत का बयान, तरङ्गनी	नागार्जुन
चित्रकूट की यात्रा	केदारदान अग्रवाल
मूर्तियां	रामविलास शर्मा
अगस्त क्रांति का गीत	जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद'
जयहिंद, आजादी का त्योहार	महेन्द्र भटनागर
मास्को है दूर अभी, चली जा रही है बड़ी लाल सेना	शिवमंगल सिंह 'सुमन'
कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी	दिनकर
मेधावी, सेतुबंधु, रूपरंग	रांगेय राघव

5. **प्रयोगवाद-** प्रयोगवाद को प्रपद्यवाद, नई कविता आदि के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दी साहित्य के प्रगतिवादी साहित्यकारों ने पाश्चात्य साहित्य का अनुकरण किया है। प्रयोगवाद के प्रमुख साहित्यकार इस प्रकार हैं-

#### साहित्यकार

अज्ञेय- चिंता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर।

धर्मवीर भारती

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

गिरिजा कुमार माथुर

प्रभाकर माधव, भवानी प्रसाद, भारत भूषण अग्रवाल, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, भवानी प्रसाद मिश्र, शंकुलता माथुर, रामविलास शर्मा, कीर्ति चौधरी आदि।

**नई कविता-** नई कविता का जन्म वर्ष 1951 में हुआ जो वर्ष 1959 तक अबाध गति चलती रही। जगदीश गुप्त तथा लक्ष्मीकांत वर्मा ने नई कविता का व्यापक प्रचार किया। नई कविता के रचनाकार और उनकी रचनाएं इस प्रकार हैं-

रचनाकार	रचनाएं
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	नये पत्ते
गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	अंधेरे में, औरांग-उटांग, ब्रह्मराक्षस, भूल-गलती, लकड़ी का रावण, अंधेरे में अंधेरा, काला पहाड़, तिलक की मूर्ति, गांध
माइकेल मधुसुदन	मेघनाथ वध



जगदीश गुप्त	शम्भुक, नाव के पाँव, शब्ददंश
केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'	ऋतम्बरा
नरेश मेहता	शबरी, संशय की एक रात, महाप्रस्थान, समय देवता
ओय	सागर तट की सीपियां, नदी के द्वीप, भग्नदूत
भवानीप्रसाद मिश्र	गीत फरोश, गांधी पंचशती, तूस की आग
धर्मवीर भारती	प्रमथ्यु गाथा, ठंढा लोहा, कनुप्रिया
विजय नारायण शाही	रघुवीर सहाय की रचना है, अलविदा
नीलाभ	संस्मरणारंभ
भारत भूषण अग्रवाल	चीरफाड़, मुक्तिमार्ग।
केदारनाथ सिंह	बाघ, अकाल में सारस, कब्रिस्तान में पंचायत (कहानी-खंड)

**नवगीत-** वर्ष 1950 के बाद के गीत की चेतना में परिवर्तन आया और माना जाने लगा कि गीतों का स्वर नये जीवन और नयी प्रगति के प्रति आस्था और विश्वास का स्वर रहा है। इस नयी चेतना को देखते हुए इस युग का नाम नया गीत, आज का गीत, आधुनिक गीत, नये गीत आदि नामों से चिह्नित किया गया। नवगीत युग के रचनाकार एवं उनकी रचनाएं निम्नलिखित हैं-

#### उपन्यास

रचनाकार	रचनाएं
राजेंद्र प्रसाद सिंह	गीतांगिनी, भूमिका, संजीवनी कहाँ
प्रकाश जैन	लहर
शंभुनाथ सिंह	माध्यम में, जहाँ दर्द नील है।
राम दरश मिश्र	मेरे प्रिय गीत, कंधे पर सूरज
कुंवर बेचैन	भीतर साँकल-बाहर साँकल
अनुप अशेष	वह मेरे गांव की हंसी थी
मयंक श्रीवास्तव	सहमा हुआ घर
देवेंद्र शर्मा इंद्र	पथरीले शोर में, कुहरे की प्रत्यांचा
वीरेंद्र मिश्रा	अविराम चल मधुवंती
योगेंद्र दत्त मिश्र	खुशबुओं के दंश
जहीर कुरेशी	एक टुकड़ा धूप
महेश्वर तिवारी	हरसिंगार कोई तो हो
उमाकांत मालवीय	एक वाचल नेह रीघा

**उपन्यास-** उपन्यास शब्द 'उप' अर्थात् समीप तथा न्यास अर्थात् थाती के योग से मिलकर बना है जिसका अर्थ है- निकट रखी हुई वस्तु। उपन्यास के विकास क्रम को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित आधारों को ग्रहण किया जाता है-

1. प्रेमचंद पूर्व युग (1877-1918 ई.)
2. प्रेमचंद युग (1918-1936 ई.)
3. प्रेमचंद युग विभिन्न प्रवृत्तियाँ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, प्रगतिवाद-प्रयोगशील (1936-1960 ई.)
4. साठोत्तरी उपन्यास
5. समकालीन परिदृश्य (आधुनिक बोध) 1960-1980 ई., (आधुनिकता बोध 1981-2000 ई.)
6. त्रासदी का प्रारंभिक दशक (2000-2010 ई.)

**प्रेमचंद पूर्व युग-** इस युग के साहित्यकार एवं रचनाएं निम्नलिखित हैं-

रचनाकार	रचनाएं
श्रद्धाराम फिल्लौरी	भाग्यवती-1877 ई.
लाला श्री निवासदास	परीक्षा गुरु-1822 ई.
बालकृष्ण भट्ट	नूतन ब्रह्मचारी 1886 ई.
ठाकुर मोहन सिंह	श्याम स्वप्न-1888 ई.
राधाकृष्ण दास	निस्साहय हिंदू-1890 ई.
पंडित लज्जा राम शर्मा	धूर्त रसिकलाल, स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी (1899 ई.) आदर्श दंपति, बिगड़े का सुधार

किशोरीलाल गोस्वामी	चपला वा नव्य समाज, त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी
गंगा प्रसाद गुप्त	लक्ष्मीदेवी
टीकाराम तिवारी	पुष्पकुमारी
रुद्रदत्त शर्मा	स्वर्ग में महासभा
श्याम किशोर शर्मा	काशी यात्रा
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	अधखिला फूल, ठेठ हिंदी का ठाठ
बंकिमचंद्र	दुर्गेशनंदिनी
मथुरा प्रसाद शर्मा	नूरजहां बेगम व जहांगीर
जयरामदास गुप्त	नवाबी परिस्ताना व वाजिद अली शाह, कश्मीर पतन
मिश्रबंधु	पुष्पमित्र, विक्रमादित्य और वीरमणि
मुंशी प्रेमचंद	सोजेवतन, किसना, जलवा व ईसार, सेवासदन, गोदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि
जगदीश झा 'विमल'	निर्धन कन्या, खरा सोना, आदर्श दम्पती, जीवन ज्योति, लीलावती, आशा पर पानी
चंडी प्रसाद हृदयेश	मनोरमा, मंगल प्रभात
बेचन शर्मा 'उग्र'	चंद हसीनों के खतूत, दिल्ली का दलाल, बुधुआ की बेटी, शराबी, फागुन के चार दिन, आदि
प्रफुल्लचंद्र ओझा	संयासिनी, पतझड़, पाप और पुण्य, जेलयात्रा, तलाका
गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'	संदेह, प्रेम की पीड़ा, अरुणोदय
विश्वनाथ शर्मा	कसौटी, वेदना, त्यागी युवक
जयशंकर प्रसाद	तितली, इरावती, कंकाल
गोविंद वल्लभ पंत	सूर्यास्त, प्रतिमा, मदारी
वृंदावन लाल वर्मा	संगम, प्रत्यागत, लगन, कुंडलीचक्र
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	अलका, प्रभावती, निरूपमा, कुल्लीभाट, बिल्लेसुर, बकरिहा, चोटी की पकड़, काले कारनामे
उपेंद्रनाथ अश्व	गिरती दीवारें, गर्म राख, बड़ी-बड़ी आंखें, शहर में धूमता आइना
भगवती प्रसाद वाजपेयी	पिपासा, दो बहनें, चलते-चलते, सूनी राह, प्रेमपथ।
भगवती चरण वर्मा	चित्रलेखा, भूले बिसरे चित्र, सामर्थ्य और सीमा, सीधी सच्ची बातें, टेढ़े-मेढ़े रास्ते,
अमृतलाल नागर	महाकाल, बूंद और समुद्र, सुहाग के नूपुर, अमृत और विष, सात घूँघटवाला मुखड़ा, अग्निगर्भा, करवट, पीढ़ियाँ।
विष्णु प्रभाकर	ढलती रात
जैनेंद्र कुमार	परख, सुखदा, विवर्त, व्यतीत, त्यागपत्र
इलाचंद्र जोशी	घृणामयी, पर्दे की रानी, प्रेम और छाया
फणीश्वरनाथ 'रेणु'	मैला आचल, दीर्घतपा, जुलूस, कितने चौराहे
हजारी प्रसाद द्विवेदी	बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचंद्र लेख, पुर्नवा,
राहुल सांकृत्यायन	सिंह सेनापति, जय यौधेय, मधुर स्वप्न, विस्मृत यात्री, दिवोदास
रांगेय राघव	मुर्दों का टीला, प्रतिदान, चीवर, अंधेरे के जुगनू, पक्षी और आकाश
मोहन राकेश	अंधेरे बंद कमरे, अंतराल, न आनेवाला कल
निर्मल वर्मा	वे दिन, रात का रिपोर्टर
उषा प्रियवंदा	पचपन खंभे लाल दीवारें
महेंद्र भल्ला	एक पति के नोट्स
कृष्ण सोबती	मित्रों मरजानी
राजेंद्र यादव	शह और मात
धर्मवीर भारती	गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा
लक्ष्मीनारायण लाल	धरती की आंखें, बया का घोंसला और सांप, रूपजीवा
लक्ष्मीकांत वर्मा	खाली कुर्सी की आत्मा, टेराकोटा
भारत भूषण अग्रवाल	लौटती लहरों की बांसुरी
यशपाल	देशद्रोही, दिव्या, पार्टी कॉमरेड, मनुष्य के रूप, अमिता, झूठा सच, अप्सरा का श्राप, क्यों फंसे, मेरी तेरी उसकी बात
नागार्जुन	रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, दुःखमोचन, वरुण के



	बेटे, कुंभीपाक, हीरक जयंती
भैरवप्रसाद	शोले, मशाल, गंगा मैया, जंजीरें और नया आदमी, सत्ती मैया का चौरा, धरती, आशा, कालिंदी, रंभा, नौजवान, काशी बाबू भाग्यदेवता, छोटी सी शुरूआत
अमृत राय	बीज, हाथी का दांत, नागफनी का देश, सुख दुःख भटियाली, जंगल, धुआं
अमरकांत	इन्हीं हथियारों से
कमलेश्वर	कितने पाकिस्तान

**हिन्दी कहानी-** हिन्दी कहानी का वास्तविक प्रारंभ भारतेंदु काल के बाद 20 वीं शती के आरंभ में हुआ। ईशा अल्ला खां की रचना 'रानी केतकी की कहानी' को सर्वप्रथम मौलिक कहानी माना जाता है। हिन्दी कहानीकार और उनकी कहानियां निम्नलिखित हैं-

कहानीकार	कहानी
किशोरीलाल गोस्वामी	इंदुवती
गिरिजा कुमार घोष	गल्पलहरी
श्री भगवानदास	प्लेग की चुड़ैल
रामचंद्र शुक्ल	ग्यारह वर्ष का समय
गिरिजादत्त वाजपेयी	पंडित और पंडितानी
विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'	रक्षाबंधन
मुंशी प्रेमचंद	कामना तरु, आत्माराम, कफन, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, बड़े घर की बेटी
सुभद्रा कुमारी चौहान	पापी पेट, बिखरे मोती, उन्मादिनी
शिवरानी देवी	कोमुदी
भीष्म साहनी	पहला पाठ, भटकती राख, शोभा यात्रा निशाचर
फरीश्वरनाथ 'रेणु'	तीसरी कसम, दुमरी, रसप्रिया
शिवप्रसाद सिंह	बिंदा महाराज, मुर्दा सराय
मधुकर सिंह	अंधेरे में
सुंदर लोहिया	मंगलाचारी

**हिन्दी नाटक -** हिन्दी नाटक का समुचित विकास आधुनिक युग के आरंभ से माना जाता है। 1950 से अब तक नाटक साहित्य को तीन भागों में विभाजित किया जाता है- भारतेंदु युग (1850-1900 ई.), प्रसाद युग (1900-1930 ई.) तथा प्रसादोत्तर युग (1930 से अब तक)। प्रमुख नाटककार और नाटक इस प्रकार हैं-

नाटककार	नाटक
भारतेंदु हरिश्चंद्र	भारत दुर्दशा, वैदिक हिंसा हिंसा न भवति
प्रताप नारायण मिश्र	गोसंकट, कलिप्रभाव, कलि कौतुक (रूपक), संगीत शांकुतल, ठठी हमीर
राधाकृष्ण दास	महारानी पदमावती, महाराणा प्रताप, दुःखिनी बाला
लाला श्रीनिवास दास	प्रह्लाद चरित्र, रणधीर और प्रेममोहिनी, संयोगिता स्वयंवर, तप्तासंवरण
बदरी नारायण चौधरी	भारत सौभाग्य, वीरांगना, रहस्य, प्रयाग 'प्रेमघन' रामागमन, वृद्धविलाप
बाबू सीता राम	नागानंद, मृच्छकटिक, मालती माधव
जयशंकर प्रसाद	अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी
अंबिकादत्त त्रिपाठी	स्वयंवर नाटक
रामचरित उपाध्याय	देवी द्रौपदी
रामनरेश त्रिपाठी	सुभद्रा, जयंत
परिपूर्णानंद वर्मा	वीर अभिमन्यु
गोकुल चंद्र वर्मा	जयद्रथ वध
बद्रीनाथ भट्ट	दुर्गावती, चंद्रगुप्त
गोविंद बल्लभ पंत	कंजूस की खोपड़ी, अंगूर की बेटी,
वृंदावन लाल वर्मा	झांसी की रानी, पूर्व की ओर, बीरबल,
डॉ. लक्ष्मी स्वरूप	नलदमयंती
बेचन शर्मा 'उग्र'	गंगा का बेटा
लक्ष्मीनारायण मिश्र	संन्यासी, राक्षस का मंदिर, मुक्ति रहस्य, सिंदूर की होली, आधी रात

**हिन्दी निबंध साहित्य**— निबंध विधा की शुरुआत भारतेंदु काल से माना जाता है। निबंध साहित्य को चार भागों में बांटा जाता है—

1. भारतेंदु युग (1857-1900 ई.) हिन्दी निबंध का अभ्युत्थान
  2. द्विवेदी युग (1900-1920 ई.) हिन्दी निबंध का परिमार्जन
  3. शुक्ल युग (1920-1940 ई.) हिन्दी निबंध का उत्कर्ष
  4. शुक्लोत्तर युग (1940 - अब तक) हिन्दी निबंध का प्रसरण
- प्रमुख निबंधकार एवं उनकी रचनाएं इस प्रकार हैं—

निबंधकार	निबंध
भारतेंदु हरिश्चन्द्र	कश्मीर कुसुम, कालचक्र, बादशाह दर्पण, वैद्यनाथ धाम, हरिद्वार, सरयूपार की यात्रा
बालकृष्ण भट्ट	साहित्य सुमन, भट्ट निबंधमाला, चारुचरित्र, प्रतिभा, आत्मनिर्भरता, आंसू, मुग्ध-माधुरी, हमारे मन की, कल्पना, माधुर्य।
पं. प्रतापनारायण मिश्र	निबंध नवनीत, प्रताप पीयूष, प्रताप, समीक्षा, प्रतापनारायण ग्रंथावली
बालमुकुंद गुप्त 'शिवशम्भू'	बंगवासी, भारत मित्र, शिवशम्भू के चिट्ठे
बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन'	बनारस का बुढ़वा मंगल
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी	कवि और कविता, कवि कर्तव्य, प्रतिभा, नाटक और उपन्यास, दंडदेव का आत्मनिवेदन, कालिदास की निरंकुशता
माधव मिश्र	वैश्योपकारक, सुदर्शन
सरदार पूर्ण सिंह	आचरण की सभ्यता, सच्ची वीरता, मजदूरी और प्रेम, ब्रह्मक्रांति, कन्यादान
पद्म सिंह शर्मा	पद्म-पराग, प्रबंध-मंजरी
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	मारेसि मोहि कुठाउँ, कछुआ धर्म, संगीत
आचार्य रामचंद्र शुक्ल	चिंतामणि
बाबू गुलाब राय	ठलुआ क्लब, मेरी असफलताएं, फिर निराशा क्यों, प्रबंध-प्रभाकर, मन की बातें, सिद्धांत और अध्ययन
पद्मलाल पुन्नालाल बख्शी	पंत्रपात्र, विज्ञान, अतीत स्मृति, मेरा जीवन क्रम रामलाल पंडित समाज सेवा और नाम, नवयुग और नव आदर्श, हिन्दी साहित्य विमर्श
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	अशोक के फूल, कल्पतरु, विचार और वितर्क, विचार प्रवाह, गतिशील चिंतन
आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी	साहित्य बीसवीं शताब्दी, आधुनिक साहित्य
डॉ. रामविलास शर्मा	साहित्य और संस्कृति, प्रगति और परंपरा, स्वधीनता और राष्ट्रीय साहित्य
रामधारी सिंह 'दिनकर'	अर्द्धनारीश्वर, हमारी सांस्कृतिक, एकता, प्रसाद, पंत
अज्ञेय	त्रिशंकु, आलबाल, अद्यतन, जोग लिखी, धार और किनारे, भवती, स्मृतिलेखा
विद्यानिवास मिश्र	छिवतन की छाँह, तुम चंदन हम पानी, आंगन का पंछी और बंजारा मन, मैंने सिल पहुंचाई
धर्मवीर भारती	ढेल पर हिमालय, पश्यंती, कुछ चेहरे कुछ चिंतन शब्दिता।
हरिशंकर परसाई	पगडंडियों का जमाना, जैसे उनके दिन फिरे, सदाचार का ताबीज, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, सुनो भाई साधो, वैष्णव की फिसलन, विकलांग श्रद्धा का दौर, तुलसीदास चंदन धिसे, भूत के पोंव पीछे
निर्मला वर्मा	चीड़ों पर चांदनी, हर बारिश में, शब्द और स्मृति

## अन्य महत्वपूर्ण लेखक एवं रचनाएं

माखनलाल चतुर्वेदी	-	हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, पुष्प की अभिलाषा
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	-	कुंकुम, हमविषयायी जनम के, रश्मि रेखा, क्रांसी, अपलक
सुभद्रा कुमारी चौहान	-	झाँसी की रानी, त्रिधारा, मुकुल
हरिवंश राय 'बच्चन'	-	मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, हालावाद के प्रवर्तक
वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन'	-	इनका साहित्यिक उपनाम 'यात्री' था। भस्मांकुर, पत्रहीन नगन गाह, प्रगतिवाद के शलाकापुरुष कहे जाते हैं।
रांगेय राघव	-	कब तक पुकारूँ, अजेय खण्डहर
रामधारी सिंह 'दिनकर'	-	कुरूक्षेत्र, रश्मिरेथी, हारे को हरिनाम, उर्वशी गीतिनाट्य